खाद्य सुरक्षा एवं जलवायु परिवर्तन पर महत्वपूर्ण व्याख्यान
अंतर्राष्ट्रीय पादप रोग विज्ञानी डा. सावरी ने संकाय सदस्यों को सम्बोधित किया

पंतनगर। 18 मई, 2010। कृषि महाविद्यालय के सभागार में अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान फिलीपिन्स के पादप रोग विज्ञानी, डा. सरजे सावरी ने आज 'खाद्य सुरक्षा, फसल स्वास्थ्य एवं वैष्विक परिवर्तन' विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर उपस्थित विष्वविद्यालय के अधिष्ठाताओं, संकाय सदस्यों एवं छात्रों को सम्बोधित करते हुए डा. सावरी ने बताया कि वैष्विक जलवायु परिवर्तन के कारण वातावरणीय तापमान एवं समुद्र के जल–स्तर में वृद्धि होती जा रही है तथा बर्फ का ढकाव कम होता जा रहा है। कृषि की विभिन्न फसल–प्रतिमान (क्रापिंग पैटर्न) का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि इस जलवायु परिवर्तन से धान का फसल–प्रतिमान सबसे अधिक प्रभावित होगा। उन्होंने श्रम की उपलब्धता तथा ऊर्जा जैसे कारकों के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल दिया। पूरे विष्व में औसत धान की उपज में ठहराव की स्थिति की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि पूरी दुनियाँ में विभिन्न पौध रोगों के कारण कृषि उत्पादन में 20–40 प्रतिषत की कमी आयी है तथा विभिन्न कृषि उत्पादों की कीमतों में लगातार वृद्धि हुई है। इस प्रकार फसल स्वास्थ्य के साथ–साथ खाद्य सुरक्षा का संकट बढ़ता जा रहा है। धान में दीर्घकालिक, तात्कालिक एवं आने वाले समय में नाषीजीव प्रबन्धन का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि वर्तमान में नाषीजीव प्रबन्धन दक्षता मात्र 0.4 से 0.7 प्रतिषत है। नाषीजीव प्रबन्धन की प्रभावी रणनीति तैयार करने में साइमुलेषन मॉडल के बारे में जानकारी देते हुए डा. सावरी ने बताया कि इस तकनीक के जरिये भविष्य में होने वाली फसलों में नुकसान, उत्पादन व उत्पादकता में कमी को प्रतिरूप के द्वारा दिखाया जा सकता है तथा उसी के अनुसार प्रभावी नाषीजीव प्रबन्धन रणनीति तैयार की जा सकती है। इस तकनीकी के जरिये फसलों से सम्बन्धित पूर्व घोषणा, नुकसान का अनुमान तथा प्रतिरूपण किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि इस तकनीकी का प्रयोग बैंकों, महामारी विज्ञान आदि क्षेत्रों में सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

डा. सावरी ने बताया कि भविष्य के पादप रोग विज्ञानियों को विभिन्न क्षेत्रों जैसे गणित, अर्थषास्त्र, पारिस्थितिकी, मानव विज्ञान, सस्य विज्ञान आदि विषयों की जानकारी होनी चाहिए। इसके लिए विभिन्न संस्थानों में वैज्ञानिकों को षिक्षण एवं प्रषिक्षण देना होगा जिससे वे भविष्य की नई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकेंगे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अधिष्ठाता, कृषि, डा. जे.पी. तिवारी ने डा. सरजे सावरी, जो पादप रोग विज्ञान विभाग के सम्मानित प्राध्यापक भी हैं, का जीवन–परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि डा. सावरी विष्व के विभिन्न देषों में अपनी महत्वपूर्ण सेवायें दे चुके हैं। डा. तिवारी ने डा. सावरी को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन सस्य विज्ञान विभाग की प्राध्यापिका, डा. सुनीता टी. पाण्डे ने किया।

व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए पादप रोग विज्ञानी, डा. सरजे सावरी एवं उपस्थित श्रोतागण